Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XIV Issue – I January – February 2025

संत तुलसी के काव्य में सामाजिक सुधार की प्रेरणा कौशल

डॉ. विनोद श्रीराम जाधव
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक
मत्स्योदरी शिक्षण संस्था द्वारा संचालित
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, अम्बड, जिला जालना, महाराष्ट्र

वर्तमान समय में हिंदी साहित्य को समझने के लिए मध्यकाल का भक्ति साहित्य समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि समृद्धता, व्यापकता, निर्भीकता, उत्कृष्टता और **सामाजिक सुधार की प्रेरणा** भक्तिकाल की मुख्य विशेषता तो है ही साथ ही ये सभी सदगुण इस काल के गहने भी हैं| सबसे पहले इसी काल में भारत की आधुनिक भाषाओँ में व्यक्तित्व, चरित्र एवं अस्मिता को परिभाषित किया गया| इसके अलावा इस काल की एक और खुबसूरत विशेषता यह है कि इसमें मानवीय मूल्यों का प्रकर्ष, आधुनिकता बोध का सूत्रपात, नारी स्वतन्त्रता पर बल और कलात्मक सौंदर्य बोध पर विशेष ध्यान दिया गया है| हम कह सकते हैं कि इस काल का साहित्य कालजई और अक्षुण्य इसलिए हैं, क्योंकि इसमें मानवीय मूल्यों के संरक्षण को, सामाजिक समरसता को, जातीय अस्मिता को और भाषाई कला कौशल को अत्यंत नाजुकता से सहेजा गया है| इसीलिए यह अखंड प्रेरणा व प्रेम की अजस्र धारा में तब से अब तक प्रवाहमान होता आया है और भविष्य में भी निरंतरता से इसी तरह प्रवाहित होता रहेगा| **शोध आलेख के परिप्रेक्ष्य में तुलसी के काव्य का अध्ययन मध्यकालीन भारतीय समाज में व्याप्त जटिलताओं के विश्लेषण का एक प्रभावी आधार प्रस्तुत करता है|**

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed Based on a work at http://www.goeiirj.com

संत तुलसी का प्रेरणा कौशल को जानने व समझने से पूर्व हमें संत तुलसी का जीवन परिचय अत्यंत संक्षिप्त में पाठकों के समक्ष रखना होगा| कहते है कि **पूत के लक्षण पालने में ही दिखते हैं** इसी तरह जो तुलसी आज हमें उनकी कृतियों द्वारा राम भक्ति सिखाते है वही तुलसी ने जब जन्म लिया तब जन्मते से ही उन्होंने रोने की जगह 'राम' शब्द बोला था और इसीलिए इस तुलसी का एक नाम **'रामबोला'** भी था| मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाले तुलसी बचपन से ही बड़े अभागे थे, जिन्हें जन्म देते ही माता छोड़ कर परमधाम सिधार गयी और पिता ने अपशगुनी समझकर त्याग दिया| **इनका जन्म सन १५३२ भाद्रपद शुक्ल एकादशी को राजापुर के सरयुपारीण ब्राह्मण कुल में हुआ था| इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था|** घर से निकाल दिए जाने पर ये अकेले अनाथ की तरह घूमने लगे| कवितावली में इन्होने स्वयं ने लिखा—"बारे तै ललात बिललात द्वारे-द्वारे दिन, चाहते हो चारि फल चारी ही चनक को|" (१)ऐसे ही घूमते-घूमते इनकी भेट रामानन्दीय सम्प्रदाय के साधु नरहरिदास से हुई| इन्होने उनको अपना गुरु बनाया और उनके साथ कई तीर्थों की यात्रा की| तीर्थाटन से लौटने के बाद इन्होंने शेष सनातन से १५ वर्ष तक वेद, शास्त्र, दर्शन व पुराण की शिक्षा प्राप्त की| तदन्तर इनका विवाह अपने ही गाँव के दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ| तुलसी पहले साधारण मानव थे, सच पुछो तो संत बनाने में इनकी पत्नी का हाथ है| विवाहोपरांत ये सुन्दर पत्नी

पर आसक्त थे और इसी आसक्ति के कारण जीवन में एक ऐसी घटना घटी कि इनकी पत्नी के मार्मिक वचनों से इनमें संसार से विरक्ति व प्रभु श्री राम से आसक्ति निर्माण होगई| देखते ही देखते साधारण तुलसी से "**तुलसी महाकवि संत तुलसीदास बन गए|**" तुलसी की पत्नी द्वारा कहे गए मार्मिक शब्द—

"अस्थि, चर्म मय देह में, तामे ऐसी प्रीति |
ऐसी जो श्री राम में, होती न भाव भीती ||"

शब्द सचमुच ज्ञानवर्धक और दिल को कचोटने वाले थे इसीलिए इन्होंने तब से घरबार छोड दिया और काशी में आगये | लगभग २० वर्षों तक भारत भ्रमण करने के बाद इन्हें भारतीय जनता को नजदीक से देखने का अवसर मिला| बहुत से सत्कार्य करने के बाद अंत में इनकी मृत्यु सन १६२३ में काशी हुई|

इनका साहित्य अजर-अमर बना हुआ है| इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

1. रामचरितमानस	**२) विनय पत्रिका**	**३) कवितावली**
4. गीतावली	**५) दोहावली**	**६) बरवै रामायण**
7. रामलला नहछू	**८) कृष्णन गीतावली**	**९) वैराग्य संदीपनी**
10. जानकी मंगल	**११) पार्वती मंगल**	**१२) रामाज्ञा प्रश्नावली**

तुलसीदास भारतीय संस्कृति और साहित्य के इतिहास में एक ऐसे महाकवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनकी काव्य सृष्टि ने न केवल धार्मिक व आध्यात्मिक चेतना को व्यापक रूप से प्रभावित किया बल्कि सामाजिक संरचना व सांस्कृतिक मूल्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन भी उपस्थित किये| इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ "रामचरितमानस" न केवल एक धार्मिक गाथा है अपितु उस युग की सामाजिक मनोवृत्तियों, मूल्यों, आस्थाओं तथा आचार संहिताओं का प्रतिबिम्ब भी हैं| इसके माध्यम से इन्होने एक ऐसे समाज का निरूपण किया जो सदियों से वर्ण, जाति, लैंगिक असमानताओं और धार्मिक संकीर्णताओं से जूझ रहा था| इन्होने भक्ति को एक सशक्त साधन के रूप में प्रयोग करते हुए मानव मात्र के कल्याण, सदाचार, सहस्तित्व औए नैतिक पुनरुत्थान का मार्ग प्रशस्त किया| इनका जन्म उस कालखंड में हुआ जब भारत सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों से गुजर रहा था| मुग़ल सत्ता का विस्तार, स्थानीय रियासतों के गठन, धार्मिक विविधता और क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य रचना की प्रवृत्ति तेजी से आकार ले रही थी| इसी पृष्ठभूमि में अवधी भाषा को अपनाकर तुलसी ने धार्मिक आख्यानों को लोकभाषा में ढाला जिससे धर्म का दायरा सीमित न रहकर व्यापकता से सामाजिक समुदायों तक पंहुचने लगा | धर्म जीवन के परंपरागत ढंगों का समर्थन करके सामजिक व्यवस्था को दृढ़ता प्रदान करता है, जिससे सामजिक एकता स्थापित होजाती हैं| थॉमस ओडिया लिखते हैं—"धर्म व्यक्ति का समूह में एकीकरण करता है, अनिश्चितता की स्थिति में उसकी सहायता करता है, सामजिक लक्ष्यों के प्रति व्यक्ति को जागरूक बनाता है, और एक-दूसरे के निकट आने की भावना को प्रोत्साहन देता है |"(२)

१५ वीं से १७ वीं सदी के दौरान भारत में भक्ति कविता एक ऐसे सांस्कृतिक क्रांतिकारी आन्दोलन के रूप में उभरी जिसने धर्म को कर्मकांडों से मुक्त कर भक्ति-भावना पर केन्द्रित किया| सभी संत कवियों ने अपने काव्य में सामाजिक एकात्मक्ता पर बल दिया| तुलसी ने भी इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए "रामचरित मानस" में एक ऐसे समाज को प्रतिपादित किया जहाँ राम केवल राजा या देवता नहीं अपितु मानव आदर्शों के उत्कृष्ट प्रतीक थे| इस प्रकार धर्म एक सुलभ सांस्कृतिक मंच बना जो वर्ग, जाति और लिंगभेद से परे था| तुलसी ने धार्मिक अनुभवों को एकांगी न रखते हुए इन्हें लोकजीवन में घोल दिया जिससे सामाजिक सद्भावना,

एकता और नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा होने लगी | इन्होने ईश्वर को मानवता के कल्याण कर्ता के रूप में चित्रित कर सामाजिक सीमाओं के विखंडन का मार्ग प्रशस्त किया| आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार—"रामचरित मानस में तुलसी ने आदर्श सामज की स्थापना की जिसमें राजा राम न्यायप्रिय, मर्यादित व लोकहितकारी हैं, जो प्रजा के प्रति उत्तरदायी व संवेदनशील हैं और जिनका राज्य धर्म, शील व सद्भाव पर आधारित है ऐसे ही रामराज्य की कल्पना समाज में व्याप्त उंच-नीच, शोषण, एवं अन्याय का प्रतिपक्ष रचती है| यह राज्यव्यवस्था शक्ति संतुलन व सैन्य बल पर आधारित न होते हुए सदाचार व लोक कल्याण भावना पर टिकी हुई है|"(३) मध्यकाल में शुद्र और अति पिछड़ी जातियों को सामजिक हाशिये पर धकेल दिया जाता था| इसी समय तुलसी ने अपने काव्य में जातीय उंच-नीच को ढीला करने का प्रयास किया इनके काव्य में जाति की कट्टरता की आलोचना निहित है| उदाहरण के लिए शबरी प्रकरण में एक भीलनी स्त्री जिसका समाज में निम्न स्थान होते हुए भी परम भक्त के रूप में प्रतिष्ठित है जो आज भी जन-जन के जेहन में बसी है| यहाँ स्पष्ट होता है कि भक्ति के समक्ष सभी सामाजिक भेदभाव अर्थहीन होजाते है| यहाँ तुलसी ने एक गहरे सामाजिक परिवर्तन की ओर संकेत किया है|

समन्वय भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है| समन्वय दों अर्थों में प्रस्तुत किया जाता है..."विस्तृत व व्यापक अर्थ में यह संयोग अथवा पारस्पारिक निर्वाह का ध्योतक है| लेकिन सांख्य और वेदांत, निर्गुण व सगुन के समन्वय की बात करते हैं तब हमारा अभिप्राय होता है—"इन दोनों विचारधाराओं में सामंजस्य की स्थापना|" और दोनों ही दृष्टियों में तुलसी समन्वयवादी है| आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में—"जायसी ने जहाँ भारतीय प्रेम व लोककथाओं को फारसी मसनवी शैली में प्रेम का सन्देश दिया वही कबीर ने हिन्दू-मुस्लिम, उंच-नीच, आमिर-गरीब आदि के भेड़ों का विरोध कर समाज को समेटने का प्रयास किया लेकिन तुलसी ने सभी अंतर्विरोधों को कई भागों में दूर कर अपनी समकालिक दृष्टि का परिचय दिया और अपना निश्चित दार्शनिक दृष्टिकोण स्थापित किया, जो मुख्य रूप से "रामचरित मानस" और "विनय पत्रिका" में देखा जाता है| लोकनायक ही समन्वय कर पाते हैं|"(४) भाषा, रस छंद, अलंकार, नाटकीयता, संवाद कौशल, प्रेरणा और समन्वय कौशल इन सभी दृष्टियों से तुलसी का रामचरित मानस अत्यंत ख्याति बटोर चुका है| कविता-कामिनी उनको पाकर धन्य होगई है| तुलसी की यह रचना सच में अद्वितीय है| हरिऔधजी की इस पंक्ति में इस बात का समर्थन मिलता है---**"कविता करके तुलसी न लसे | कविता लसी पा तुलसी की कला ||"**

जीवन की इस कंगालियत में तुलसी ने राम भक्ति के बीज ना जाने कहाँ छुपा कर रखे थे| तुलसी ने जीवन को एक संग्राम कह है जिसमें सत-असत का संघर्ष सदा ही चलता है| असत वृत्तियाँ बड़ी प्रबल होती हैं उन पर विजय प्राप्त करना सहज नहीं है| जीवन में कई ऐसे प्रसंग आते हैं जब मनुष्य अपना विवेक खोकर लोक मर्यादा का उल्लंघन करता है| तुलसी ने रामचरित के माध्यम से मर्यादा रामकथा द्वारा जन-जन को मर्यादा का पाठ सिखाते हैं| रामचरित मानस विश्व साहित्य की अनमोल धरोहर है| डॉ.शिवकुमार शुक्ल ने रामचरित मानस तुलनात्मक अध्ययन में लिखा है—"महाकाव्यों की शैली से प्रभावित होकर तुलसी ने ग्रन्थ के आरम्भ में वन्दना, खल निंदा, एवं सज्जन प्रशंशा आदि का वर्णन भी किया है तथा तथा अन्यत्र प्रकृति-चित्रण, विवाह वर्णन, युद्ध वर्णन अदि में मानव जीवन से सम्बंधित विभिन्न व्यापारों का कुशलता पूर्वक निर्वहन किया है|"(५)

गोपाल जी गुप्त कहते हैं, तुलसी के इन विचारों से हम धन्य हो उठते हैं--"जो दिन अवस्था में हैं मन की समस्याओं से पीड़ित हैं उन सबको मन की शान्ति और विश्राम की प्राप्ति का सूत्र केवल प्रभु राम है| जैसे वन में चारों और आग लग जाने पर सरोवर का आश्रय प्राप्त कर उसमें कूद पड़ने से हम जलने से बाख सकते हैं उसी प्रकार संसार के विषयों की दुःख व चिंता की अग्नि

में हम सब जल रहे हैं और इस जलन से हमें श्री राम ही मुक्त कर सकते हैं|"(६)

और अंत में.....

तुलसीदास में अपने काव्य में सत्य,प्रेम, करूणा, त्याग और परोपकार जैसे मूल्यों को केंद्रीय स्थान दिया| इन्होने यह भी संकेत दिया कि समाज का वास्तविक उत्थान राजनीतिक परिवर्तन से अधिक नैतिक मूल्यों की पुनार्स्थापना में निहित है| राम-सीता चरित्र चित्रण, हनुमान, लक्ष्मण तथा भरत जैसे पात्रों की उदारता और कर्तव्य के साथ सेवाभाव एक ऐसे सामाजिक आदर्श का निर्माण करते हैं जो लोगों को सही-गलत की पहचान करने और न्यायोचित जीवनशैली अपनाने का संकेत देता है| तुलसीदास के काव्य में भारतीय समाज में परिवर्तन का चित्रण एक बहुस्तरीय प्रक्रिया के रूप में सामने आता है| इन्होने भक्ति को माध्यम बनाकर समाज में वर्ण और जाति पर आधारित कठोर सामाजिक व्यवस्थाओं को चुनौती दी, नारी के प्रति सम्मान एवं संवेदना की भावनाओं को आगे बढाया तथा धर्म के व्यापक, बहुलतावादी और् समन्वयकारी स्वरुप को उजागर किया| अवधी जैसी लोकभाषा को अपनाकर इन्होने ज्ञान व अध्यात्मिक अनुभूति को विद्वान्वर्ग की परिधि से बाहर निकालकर आमजनमानस तक पंहुचाया जिससे सामाजिक चेतना का विकास हुआ|

अंततः तुलसीदासजी के काव्य में भारतीय समाज में परिवर्तन के सूत्र केवल अतीत के अध्ययन का विषय नहीं बल्कि वर्तमान समाज के लिए भी असीम प्रेरणा स्त्रोत बन सकते हैं| इनके आदर्श, नैतिक मूल्य व मानवीय संवेदनाएं आज भी प्रासंगिक हैं जो सारी दुनिया को व्यावहारिक जीवन के सन्दर्भ में नैतिकता, सामुदायिक सौहार्द और मानवतावाद के मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं| तुलसीदास का युग धार्मिक विविधताओं, साम्प्रदायिक टकरावों और राजनीतिक फेरबदल का युग था| इस परिप्रेक्ष्य में इनका काव्य एक बिच का रास्ता दिखाता है जहाँ संकीर्ण धार्मिक मतभेदों के स्थान पर सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय को तरजीह दी जाती है| इन्होने ईश्वर को मानवता के कल्याण की आधारशिला मानते हुए यह इंगित किया कि किसी भी रूप में ईश्वर भक्ति यदि मानव मूल्यों और धर्म के सार तत्व को आगे बढाती है, तो वह स्वीकार्य है| यह सन्देश प्रेरणा के रूप में लोगों के बीच आपसी समझ, सौहार्द और सहयोग की नींव रखता है, जो अंततः भारतीय समाज में सामुदायक एकता की प्रेरणा लेकर आता है और सचमुच यह सामुदायिक एकता का परिचायक भी है|

सन्दर्भ सूची-

(१) कवितावली---संत तुलसीदास
(२) थॉमस ओडियो---रिलिजिओन |
(३) गोस्वामी तुलसीदास—रामचंद्र शुक्ल, हिंदी बुक सेंटर दिल्ली|
(४) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी—हिंदी साहित्य की भूमिका—राजकमल प्रकाशन—संस्करण—२०१० पृष्ठ संख्या—९८
(५) डॉ. शिवकुमार शुक्ल—रामचरित मानस तुलनात्मक अध्ययन
(६) गोपालजी गुप्त—तुलसी के 'मानस' में शैली वैविध्य |